बच्चों की सुभद्रा

संपादन : चन्द्रा सदायत

नेहरू बाल पुस्तकालय

बच्चों की सुभद्रा

संपादन

चन्द्रा सदायत

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 978-81-237-4858-X
पहला संस्करण : 2006
दूसरी आवृत्ति : 2008 *(शक 1930)*
© आलोक राय
Bachchon Kee Subhadra *(Hindi)*
रु. 30.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, प्लॉट नं. 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

सूची

भूमिका	5
कोयल	7
रामायण की कथा	8
पानी और धूप	10
खिलौने वाला	12
कोयल	14
पतंग	15
कदंब का पेड़	16
बांसुरी वाला	18
मुन्ना का प्यार	20
अजय की पाठशाला	22
कुट्टी	24
नटखट विजय	25
सभा का खेल	26
झांसी की रानी	28

भूमिका

आजादी का अलख जगाने वाली स्वतंत्रता सेनानी और हिन्दी की अत्यंत लोकप्रिय कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** का जन्म 16 अगस्त 1904 को इलाहाबाद के निहालपुर मुहल्ले में हुआ। उनकी शिक्षा इलाहाबाद के क्रास्टवेट स्कूल में हुई, जहां उन्हें महादेवी वर्मा जैसी दोस्त मिलीं। महादेवी जी उस समय पांचवीं कक्षा की छात्रा थीं और सुभद्रा जी सातवीं कक्षा की। दोनों की दोस्ती आजीवन कायम रही। आठवीं कक्षा में ही सुभद्रा जी का विवाह खंडवा निवासी **ठाकुर लक्ष्मण सिंह** से हुआ और ससुराल चले जाने की वजह से उनकी पढ़ाई बीच में ही छूट गई, वे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकीं।

सन् 1920 में गांधी जी के आह्वान पर वे पति के साथ आजादी के आंदोलन में कूद पड़ीं। आज़ादी के लिए लड़ने के कारण उन्हें कई बार घर-परिवार और बाल-बच्चों को छोड़कर जेल जाना पड़ा। उन्होंने संघर्ष का यह रास्ता तब चुना था जब देश की अधिकांश स्त्रियां पर्दा प्रथा और अन्य सामाजिक रूढ़ियों की जंजीरों में जकड़ी हुई थीं।

सुभद्रा जी बचपन में ही तुकबंदियां करने लगी थीं। उनकी पहली कविता 'नीम' नाम से सन् 1913 में हिन्दी की प्रतिष्ठित प्रत्रिका 'मर्यादा' में छपी, उस समय वे मात्र नौ वर्ष की थीं। धीरे-धीरे उनकी राजनीतिक और सामाजिक सक्रियता, उनकी लेखनी द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति पाने लगी। राजनीतिक पराधीनता ही नहीं, सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ भी वे आजीवन लड़ती रहीं। चवालिस वर्ष की उम्र में 15 फरवरी 1948 को कार दुर्घटना में उनका निधन हो गया।

सुभद्रा जी ने अपने जीवन में जो कुछ किया या कहा, उसे पहले अपने आचरण में उतारा। उनकी कथनी और करनी में भेद न था। जाति बंधन की सारी सीमाओं को तोड़ते हुए उन्होंने अपनी बड़ी बेटी सुधा का विवाह बिना दान-दहेज के प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय से किया। विवाह के समय उन्होंने कन्यादान करने से इनकार कर दिया। कहा कि मनुष्य, मनुष्य का दान नहीं कर सकता, विवाह के बाद भी वह बेटी मेरी ही रहेगी।

उन्हें जो न्यायोचित लगता था, उसे पाने के लिए वे जी जान से भिड़ जाती थीं, और पाकर ही रहती थीं। स्वभाव से वे सरल, मिलनसार और धुन की पक्की थीं।

उनकी लोकप्रियता का कारण उनकी सहज आत्मीयता और लोक भावनाओं से गहरा जुड़ाव था। उनके साहित्य का प्रमुख स्वर है स्वाधीनता की चेतना था, जिसकी अभिव्यक्ति

उनके देश-प्रेम, सामाजिक रूढियों का विरोध, स्त्री चेतना तथा साहस और बलिदान के रूप में हुई । प्रकृति और प्रेम के विविध चित्र भी उनके साहित्य में अंकित हुए हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में पारिवारिक जीवन की सहज और सुंदर झांकी प्रस्तुत की है। इसी झांकी को दर्शाते हुए उन्होंने बच्चों के लिए कुछ बहुत अच्छी कविताएं लिखी हैं। अपने बच्चे के खेलकूद, पढ़ाई-लिखाई, लड़ाई-झगड़े...सभी कुछ उनके सामने होते थे और वे अपने विनोदी स्वभाव के कारण उनमें आनंद पाती थीं। बच्चों के साथ वे अपने बचपन को फिर से जी रही थीं। बच्चों के अपने जीवन के जाने-पहचाने और परिचित प्रसंगों को ही सुभद्रा जी ने अपनी कल्पना से, अपनी कला से पुनर्सृजित किया है। वहां खिलौने हैं, पतंग है, कोयल है, बांसुरी है, रूठना है, रोना है, शिकायत है, मान-मनौवल है, कल्पना की ऊंची उड़ान है, बच्चों की शरारत और नटखटपन तथा मां की ममता भी है।

सुभद्रा जी की बाल कविताओं का महत्व यह जानने के लिए भी है कि एक मां और एक स्त्री कवि बच्चों के बारे में क्या सोचती और लिखती है। एक मां बाल सुलभ क्रीड़ाओं का जितना सूक्ष्म अवलोकन कर सकती है, उतना कोई पुरुष रचनाकार नहीं कर सकता।

बच्चों में सहज जिज्ञासा वृत्ति होती है, जिज्ञासा प्रश्नों को जन्म देती है और वे प्रश्न उत्तर की अपेक्षा रखते हैं। इस बात को जानने वाला ही श्रेष्ठ बाल साहित्य रच सकता है। सुभद्रा जी ने इसे पहचाना था। उनकी अधिकांश बाल कविताओं में मां के साथ बच्चे का सहज आत्मीय संवाद है, जिनमें उसकी जिज्ञासा, कौतूहल और कल्पनाशीलता व्यक्त हुई है। इन कविताओं का उद्देश्य है बच्चों की कल्पना और उनकी तर्कशीलता को जगाना, उनके सोच-विचार को गतिशील बनाना और उनमें अपने आस-पास के परिवेश और प्रकृति के प्रति साहचर्य तथा प्रेमभाव पैदा करना।

बच्चों की सुभद्रा नामक इस संग्रह में उनकी बाल कविताओं के साथ 'झांसी की रानी' भी शामिल की गई है जो बच्चों और बड़ों, दोनों में समान रूप से लोकप्रिय है। आशा है यह संग्रह बच्चों को अपनी विरासत से जोड़ने और सार्थक जीवनमूल्यों को आत्मसात करने में सहायक होगा।

–चन्द्रा सदायत

कोयल

काली काली कोयल है
पर कितनी मीठी बोली है
इसने ही तो कूक कूक
आमों में मिश्री घोली है।
यही आम जो अभी लगे हैं
खट्टे खट्टे, हरे हरे
कोयल कूकेगी हो जाएंगे
पीले, रस भरे भरे।
हमें देख कर टपक पड़ेंगे
हम खुश होकर खाएंगे
ऊपर गाएगी कोयल
हम नीचे उसे बुलाएंगे।
कोयल, कोयल, सच बतलाओ
क्या संदेशा लाई हो
बहुत दिनों के बाद आज फिर
इस डाली पर आई हो।
क्या गाती हो किसे बुलाती हो
कह दो कोयल रानी
प्यासी धरती देख मांगती हो
क्या मेघों से पानी।
अथवा कड़ी धूप में हमको
दुखी देख घबराती हो
'शीतल छाया भेजो' यह
बादल से कहने जाती हो।

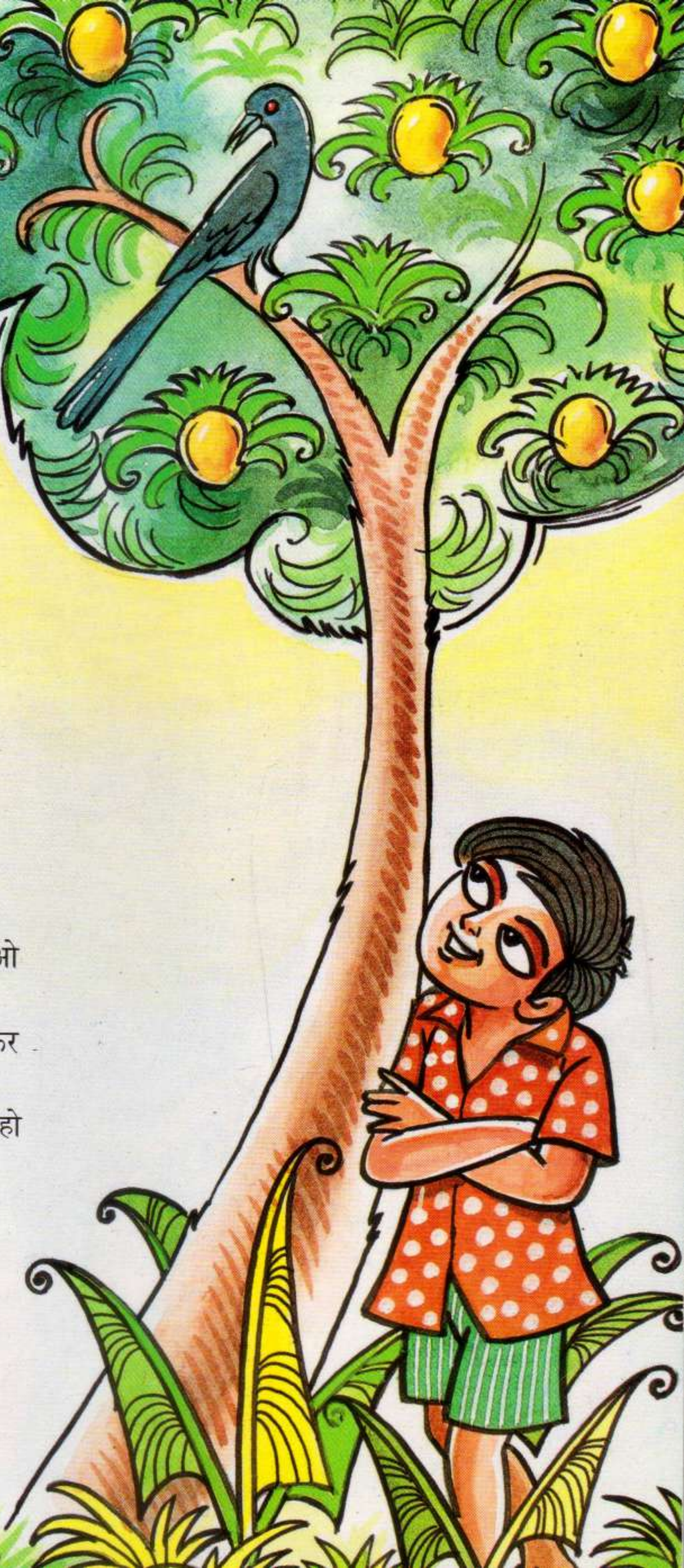

रामायण की कथा

आज नहीं रुक सकता अम्मां
जाऊंगा मैं बाहर
रामायण की कथा हो रही
होगी सरला के घर।
मेरे ही आगे उसके घर
आया था हलवाई
पूजा में प्रसाद रखने को
वह दे गया मिठाई।
पूजा हो जाने पर बंटता
है प्रसाद मनमाना
चाहो तो प्रसाद लेने को
मां तुम भी आ जाना।
क्या कहती हो अभी धूप है
अभी न बाहर जाऊं
यह क्या मां, जब अभी
जा रहे थे काका जी बाहर
तब भी तो थी धूप गए थे
वे भी तो नंगे सर।
उन्हें नहीं रोका था तुमने
मुझे रोकती जातीं
यही तुम्हारी बात समझ में
कभी न मेरे आती।

वे किसलिए कचहरी में मां
रोज धूप में जाते
कुछ भी उन्हें न कहतीं वे तो
बहुत शाम को आते।
मैं जब कभी काम पड़ने पर
भी हूं बाहर जाता
नहीं शाम भी होने पाती
जल्द लौट कर आता।
तब भी मुझको रोका करतीं
मां तुम कितनी भोली
नहीं खेलने जाता हूं मैं
गुल्ली डंडा गोली।
काका जी की तरह न अम्मां
देर लगाऊंगा मैं
कथा हुई फिर क्या, प्रसाद
लेकर आ जाऊंगा मैं।
तो घंटा बज उठा, हो गई
अम्मां मुझको देरी
वह देखो, आ रही बुलाने
मुझको सरला मेरी।

पानी और धूप

अभी अभी थी धूप बरसने
लगा कहां से यह पानी
किसने घड़े फोड़ बादल के
की है इतनी शैतानी।
सूरज ने क्यों बंद कर लिया
अपने घर का दरवाजा
उसकी मां ने भी क्या उसको
बुला लिया कह कर आ जा
जोर जोर से गरज रहे हैं
बादल हैं किसके काका
किसको डांट रहे हैं किसने
कहना नहीं सुना मां का।
बिजली के आंगन में अम्मां
चलती है कितनी तलवार
कैसी चमक रही हैं फिर भी
क्यों खाली जाते हैं वार।
क्या अब तक तलवार चलाना
मां वे सीख नहीं पाए
इसीलिए क्या आज सीखने
आसमान पर हैं आए।
एक बार भी मां यदि मुझको
बिजली के घर जाने दो।
उसके बच्चों को तलवार
चलाना सिखला आने दो
खुश होकर तब बिजली देगी
मुझे चमकती सी तलवार
तब माँ कोई कर न सकेगा
अपने ऊपर अत्याचार।
पुलिसमैन अपने काका को
फिर न पकड़ने आएंगे
देखेंगे तलवार दूर से ही
वे सब डर जाएंगे।
अगर चाहती हो मां काका
जाएं अब न जेलखाना
तो फिर बिजली के घर मुझको
तुम जल्दी से पहुंचाना।
काका जेल न जाएंगे अब
तुझे मंगा दूंगी तलवार
पर बिजली के घर जाने का
अब मत करना कभी विचार।

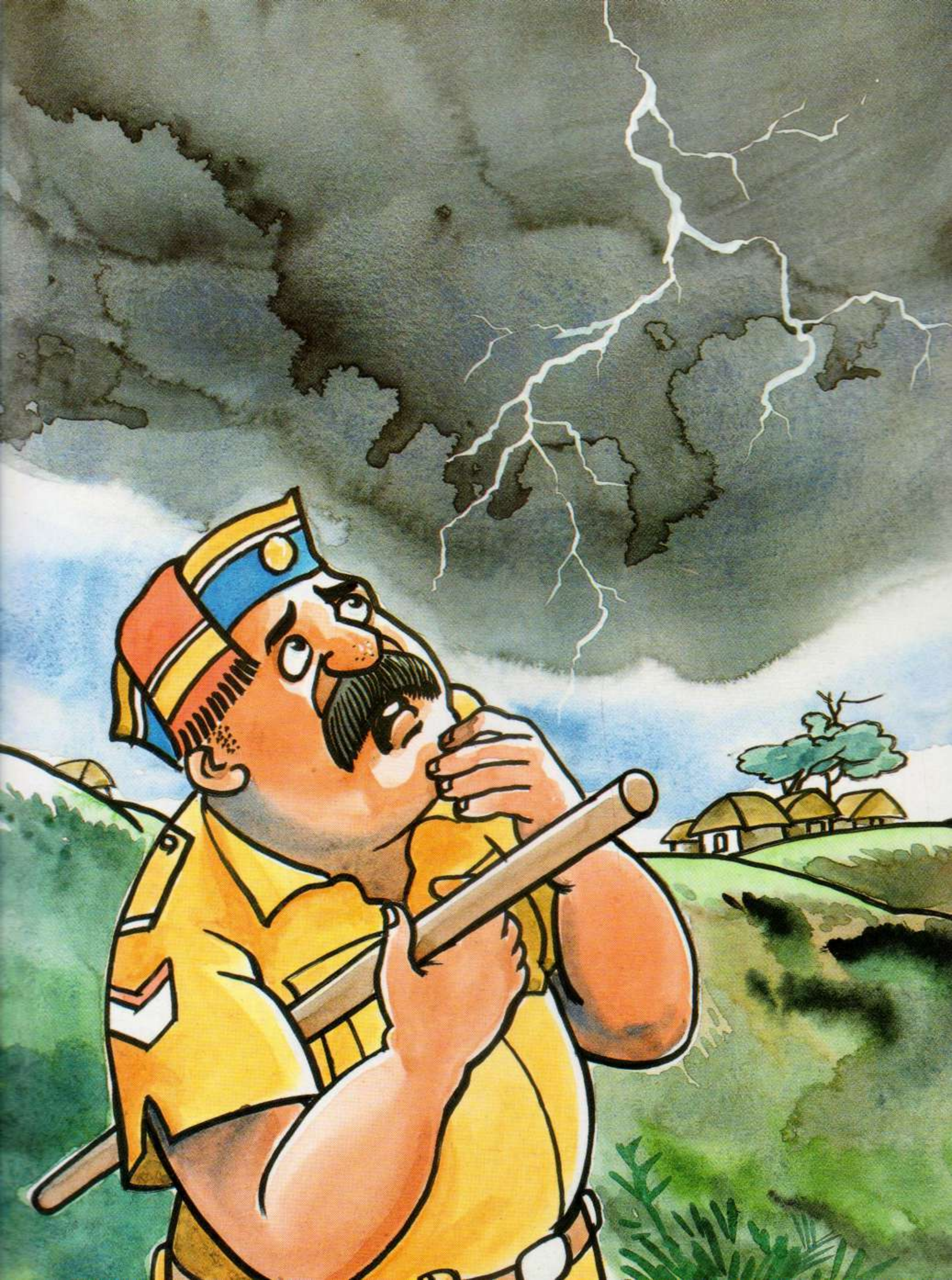

खिलौने वाला

वह देखो मां आज खिलौने वाला
फिर से आया है
कई तरह के सुंदर सुंदर
नए खिलौने लाया है।
हरा हरा तोता पिंजड़े में
गेंद एक पैसे वाली
छोटी सी मोटर गाड़ी है
सर सर सर चलने वाली।
सीटी भी है कई तरह की
कई तरह के सुंदर खेल
चाभी भर देने से भक भक
करती चलने वाली रेल।
गुड़िया भी है बहुत भली सी
पहिने कानों में बाली
छोटा सा 'टी सेट' है
छोटे छोटे हैं लोटा थाली।
छोटे छोटे धनुष बाण हैं
हैं छोटी छोटी तलवार
नए खिलौने ले लो भैया
जोर जोर वह रहा पुकार।
मुन्नू ने गुड़िया ले ली है
मोहन ने मोटर गाड़ी
मचल मचल सरला कहती है
मां से लेने को साड़ी
कभी खिलौने वाला भी मां
क्या साड़ी ले आता है।
साड़ी तो वह कपड़े वाला
कभी कभी दे जाता है

अम्मां तुमने तो ला कर के
मुझे दे दिए पैसे चार
कौन खिलौना लेता हूं मैं
तुम भी मन में करो विचार।
तुम सोचोगी मैं ले लूंगा
तोता, बिल्ली, मोटर, रेल
पर मां, यह मैं कभी न लूंगा
ये तो हैं बच्चों के खेल।
मैं तलवार खरीदूंगा मां
या मैं लूंगा तीर कमान
जंगल में जा, किसी ताड़का
को मारूंगा राम समान।
तपसी यज्ञ करेंगे, असुरों
को मैं मार भगाऊंगा
यों ही कुछ दिन करते करते
रामचन्द्र बन जाऊंगा।
यहीं रहूंगा कौशल्या मैं
तुमको यहीं बनाऊंगा।
तुम कह दोगी वन जाने को
हंसते हंसते जाऊंगा।
पर मां, बिना तुम्हारे वन में
मैं कैसे रह पाऊंगा।
दिन भर घूमूंगा जंगल में
लौट कहां पर आऊंगा।
किससे लूंगा पैसे, रूठूंगा
तो कौन मना लेगा
कौन प्यार से बिठा गोद में
मन चाही चीजें देगा।

वह देखो मां आज खिलौने वाला
फिर से आया है
कई तरह के सुंदर सुंदर
नए खिलौने लाया है।
हरा हरा तोता पिंजड़े में
गेंद एक पैसे वाली
छोटी सी मोटर गाड़ी है
सर सर सर चलने वाली।
सीटी भी है कई तरह की
कई तरह के सुंदर खेल
चाभी भर देने से भक भक
करती चलने वाली रेल।

कोयल

कोयल इतना भेद बता दो
यह अपनी मीठी बोली,
जिसे सुना कर तुमने सारे
आमों में मिश्री घोली।
यह मिठास तुमने अपनी
अम्मां से ही पाई होगी,
अम्मां ने ही मीठी मीठी
बोली सिखलाई होगी।
इसीलिए तो तुम जादू सा
हम सब पर कर जाती हो
कुहू कुहू कर डाली डाली पर
खुश होकर गाती हो।
कोयल अब तुम घर को जाओ
अम्मां घबराती होगी
बार बार वह तुम्हें देखने
द्वारे तक आती होगी।
शाम हुई हम भी जाते हैं
तुम भी तड़के आ जाना
हम खेलेंगे यहां डाल पर
बैठी बैठी तुम गाना।

पतंग

बनिये की दुकान पर अम्मां
आए हैं पतंग इतने।
एक नहीं, दो नहीं, सुनो मां
उतने तारे हैं जितने ॥
लाल लाल हैं, हरे हरे हैं,
पीले और चांद-तारा।
धेले वाला भी पतंग मां
लगता हमें बहुत प्यारा ॥
पैसे वाला ले दो मां
या धेले वाला ही ले दो।
क्यों देरी करती जाती हो
उठो चलो पैसा दे दो ॥
वह देखो वह रामा मुन्नू
लाए हैं पतंग कैसा।

मां वे हमें चिढ़ाएंगे यदि
ला न सकेंगे हम वैसा ॥
जो तुम अम्मां देर करोगी
पतंग न हम ले पाएंगे।
सब लड़के खरीद लेंगे मां
हम यों ही रह जाएंगे ॥
तुम तो नहीं समझती हो मां
पतंग और मंझे की बात।
घर में बैठी बैठी जाने
क्या करती रहतीं दिन रात ॥
आओ चल कर बाहर देखो
उड़ती है पतंग कितनी।
कभी न देखी होंगी तुमने
उड़ती एक साथ इतनी ॥
अब हम रह न सकेंगे अम्मां
हम भी पतंग उड़ाएंगे।
पैसा हमें न दोगी तो हम
रोएंगे चिल्लयएंगे ॥

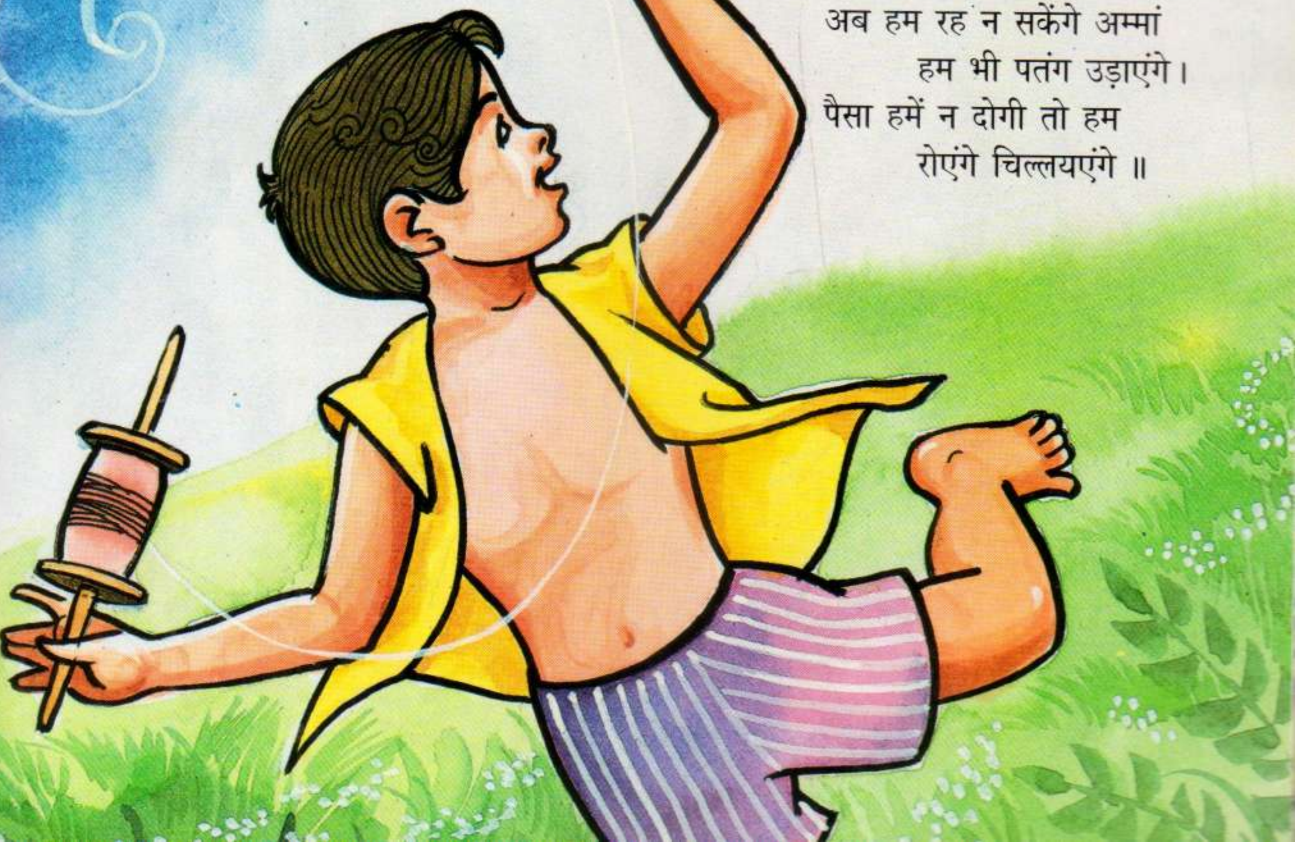

कदंब का पेड़

यह कदंब का पेड़ अगर मां
होता जमुना तीरे
मैं भी इस पर बैठ कन्हैया
बनता धीरे-धीरे।
ले देतीं यदि मुझे बांसुरी
तुम दो पैसे वाली
किसी तरह नीची हो जाती
यह कदंब की डाली।
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं
चुपके चुपके आता
इस नीची डाली से अम्मां
ऊंचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठ फिर बड़े मजे से
मैं बांसुरी बजाता
अम्मां अम्मां कह वंशी के
स्वर में तुम्हें बुलाता।
सुन मेरी वंशी को माँ तुम
कितनी खुश हो जातीं
मुझे देखने काम छोड़ कर
तुम बाहर तक आतीं।
तुमको आती देख बांसुरी रख
मैं चुप हो जाता
एक बार मां कह पत्तों में
धीरे से छिप जाता।
तुम हो चकित देखतीं चारों
ओर न मुझको पातीं।
तब व्याकुल सी हो कदंब के
नीचे तक आ जातीं।
पत्तों का मर मर स्वर सुन जब

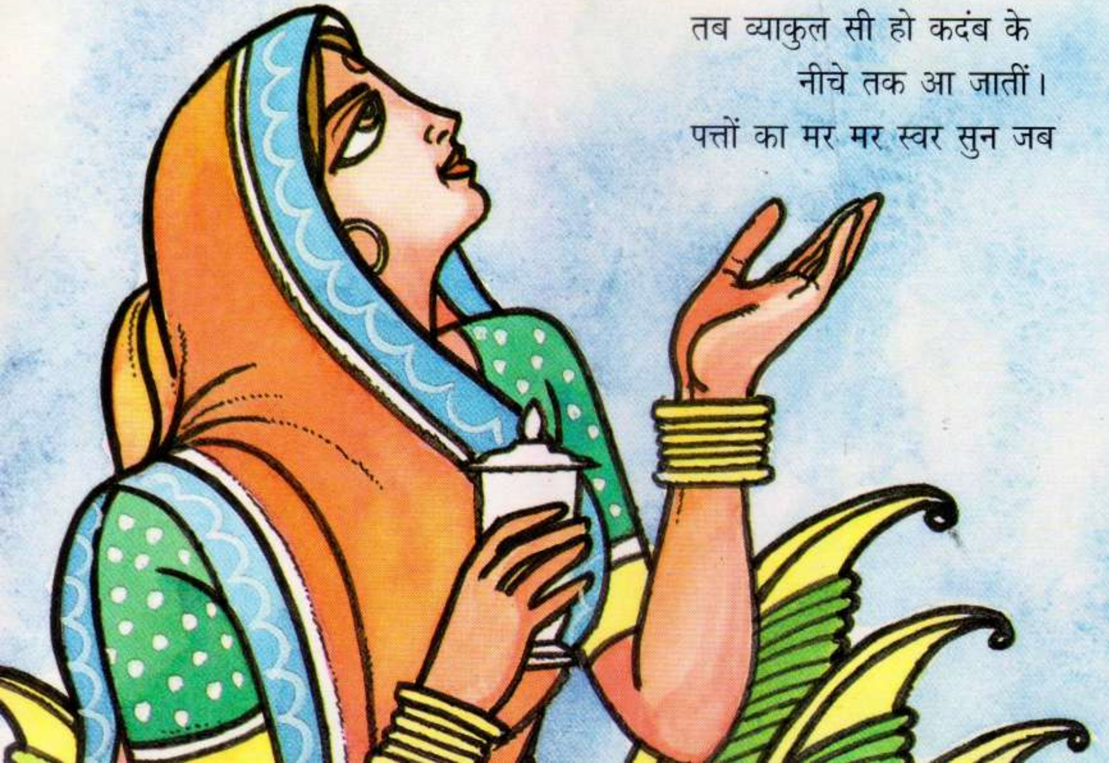

ऊपर आंख उठातीं
मुझे देख ऊपर डाली पर
कितना घबरा जातीं।
गुस्सा होकर मुझे डांटती
कहतीं 'नीचे आ जा'
पर जब मैं न उतरता हंस कर
कहतीं मुन्ना राजा।
नीचे उतरो मेरे भैया
तुम्हें मिठाई दूंगी।
नए खिलौने माखन मिश्री
दूध मलाई दूंगी
मैं हंस कर सबसे ऊपर की
टहनी पर चढ़ जाता
पत्तों में छिप कर धीरे से
फिर बांसुरी बजाता।
बहुत बुलाने पर भी माँ जब
मैं न उतर कर आता
तब मां, मां का हृदय तुम्हारा
बहुत विकल हो जाता।
तुम आंचल पसार कर अम्मां
वहीं पेड़ के नीचे
ईश्वर से कुछ विनती करतीं
बैठी आंखें मीचे।
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं
धीरे धीरे आता
और तुम्हारे फैले आंचल
के नीचे छिप जाता।
तुम घबरा कर आंख खोलतीं
पर मां, खुश हो जातीं
जब अपने मुन्ना राजा को
गोदी में ही पातीं।
इसी तरह कुछ खेला करते
हम तुम धीरे धीरे
यह कदंब का पेड़ अगर
मां होता जमुना तीरे।

बांसुरी वाला

अम्मां मुझे बांसुरी ले दो
मैं भी उसे बजाऊंगा।
ग्वाले का कुछ काम नहीं है
मैं ही गाय चराऊंगा॥
गोरा हूं तो हर्ज नहीं मां।
मोर मुकुट वंशी वाला।
बन जाऊंगा हाथ लकुटिया
लेकर वह कंबल काला॥
जिसे धूप में बिछा बैठ कर
कभी कभी लिखती हो तुम।
गैया दुहती हुई यशोदा
मैया सी दिखती हो तुम॥
चुन्नी चम्पा कल्लू बुटरा
बन जाएंगे गोपी ग्वाल।
मां, तुम मही बनाना
माखन मुझे खिलाना मिश्री डाल॥
यों ही कुछ दिन करते-करते
ज्यों ही कुछ बढ़ पाऊंगा।
बैठ किसी रथ पर गोकुल से
मैं भी मथुरा जाऊंगा॥
जो लड़ने आएंगे कुश्ती
में मैं उन्हें हरा दूंगा।
मार कंस मामा को असुरों को
भी खूब डरा दूंगा॥
पर मां एक बात बतलाओ
क्या मामा मथुरा में है?
कंस सरीखी वे भी क्या मां
सचमुच बहुत बुरे से हैं?
मामा बुरे न होंगे तो मैं
उनसे मिलने जाऊंगा।
और जरूरत समझी तो कुछ
गीता उन्हें पढ़ाऊंगा॥
कहा अजय ने वंशी ले
वंशीवाले बन जाओगे।
किंतु कंस को गीता का तुम
कैसे पाठ पढ़ाओगे?
अर्जुन को भगवान कृष्ण ने
तभी सुनाई थी गीता।
जब कौरव की सभा बीच थीं
लाई गई सती सीता॥
चीर खींच कर दुःशासन ने
उनको बहुत सताया था।
तभी कृष्ण ने अर्जुन को
गीता का पाठ पढ़ाया था॥
जीजी बोलीं—पगले हो तुम
इसका तुमको ध्यान नहीं।
किसने गीता किसे सुनाई
इतना भी तो ज्ञान नहीं॥
सीता तो थी रामायण में
रामचन्द्र जी की रानी।
चीर द्रौपदी का खींचा था
दुःशासन ने अभिमानी॥
इस पर कौरव पांडव ने की
जब लड़ने की तैयारी।
बने सारथी अर्जुन के रथ
पर थे गोवर्धनधारी॥
देख सामने रिश्तेदारों
को जब अर्जुन घबराए।
बोले मैं न इन्हें मारूंगा
राज्य मिले या मिट जाए॥
काम बिगड़ता देख कृष्ण ने
गीता उन्हें सुनाई थी।
यों भाई के हाथों भाई
की हत्या सिखलाई थी॥
मोहन मुरली वाले चाहे
दोनों भाई बन जाना।
किंतु स्वार्थ के लिए
न भाई से भाई को लड़वाना॥

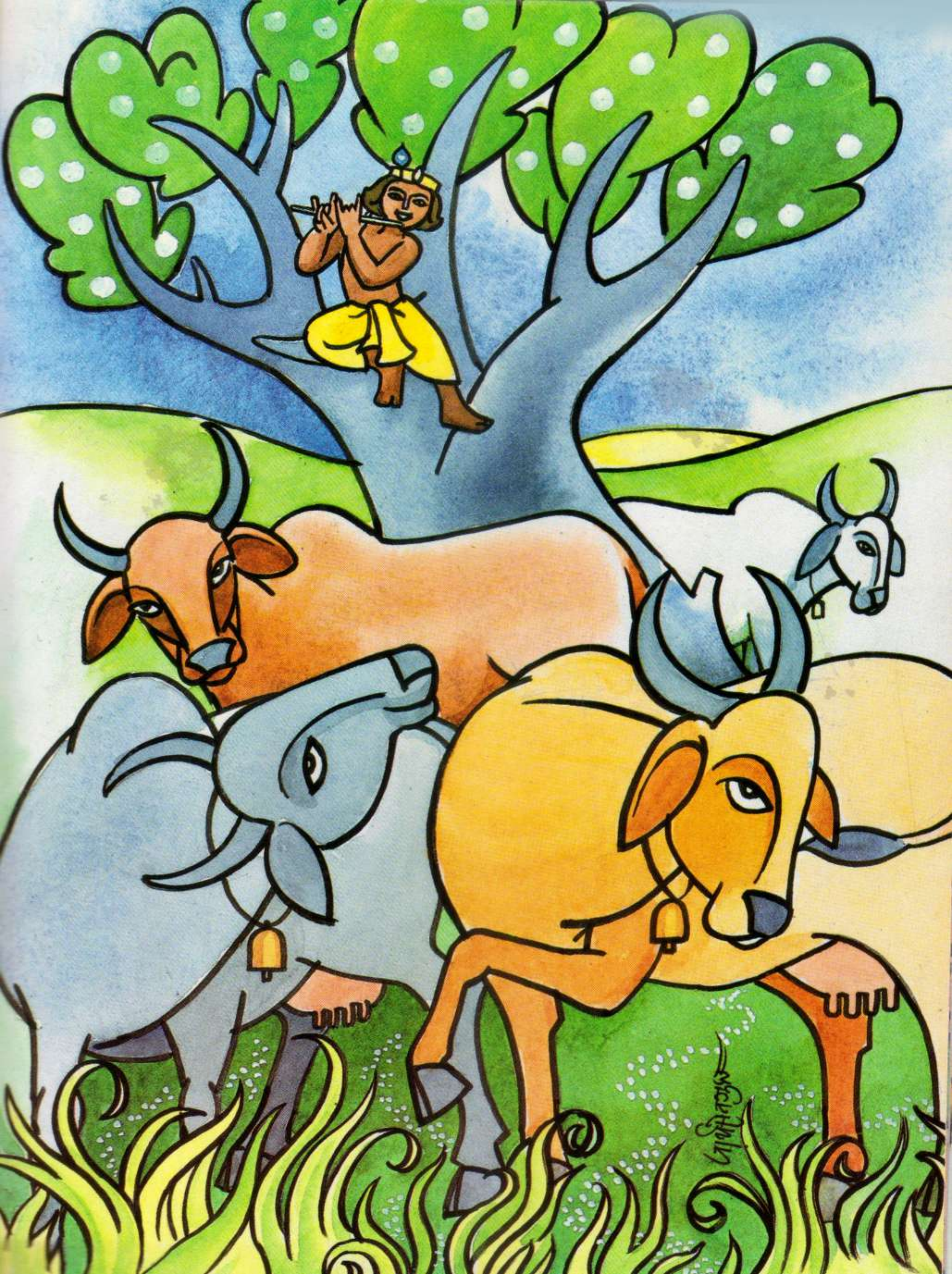

मुन्ना का प्यार

मां, मुन्ना को तुम हम सबसे
क्यों ज्यादा करती हो प्यार?
हमें भेज देतीं पढ़ने को
उसका करतीं सदा दुलार ॥
उसे लिए रहतीं गोदी में
पैरों हमें चलाती हो।
हमें अकेला छोड़ उसे तुम
अपने साथ सुलाती हो ॥
उसके रोने पर तुम अपने
काम छोड़ कर आती हो।
किंतु हमारे रोने पर तुम
कितनी डांट लगाती हो ॥
मां, क्या मुन्ना ही बेटा है
हम क्या नहीं तुम्हारे हैं?
सच कह दो मां, उसी तरह क्या
तुम्हें नहीं हम प्यारे हैं?
तुम भी बेटे हो मुझको तो
सभी एक से प्यारे हो ॥
सभी हृदय के टुकड़े हो
सब मेरे राज दुलारे हो ॥
किंतु बड़े हो तुम्हें बोलना
बातें करना आता है।
इसीलिए यों बात बात पर
रोना नहीं सुहाता है ॥
रोना अच्छा नहीं तुम्हें यह
बहुत बार बतलाया है।
पर छोटे मुन्ना को बोलो
किसने यह सिखलाया है ॥
मां मैंने तो छोटे मुन्ना
को भी यह बतलाया है।
रोना बहुत बुरा है भैया
बहुत बार समझाया है ॥
किंतु किसी दिन भी अम्मां वह
रोए बिना नहीं सोता।
सोकर जब उठता है तब भी
कितना मचल मचल रोता ॥
देखो अब भी तो रोता है
आंसू से मुंह गीला है।
मुन्ना कहना नहीं मानता
मां, वह बहुत हठीला है ॥
रोने पर भी मुन्ना का
करती हो माँ, बहुत दुलार।
हम रोते हैं कभी कभी तो
हमको क्या न करोगी प्यार ॥

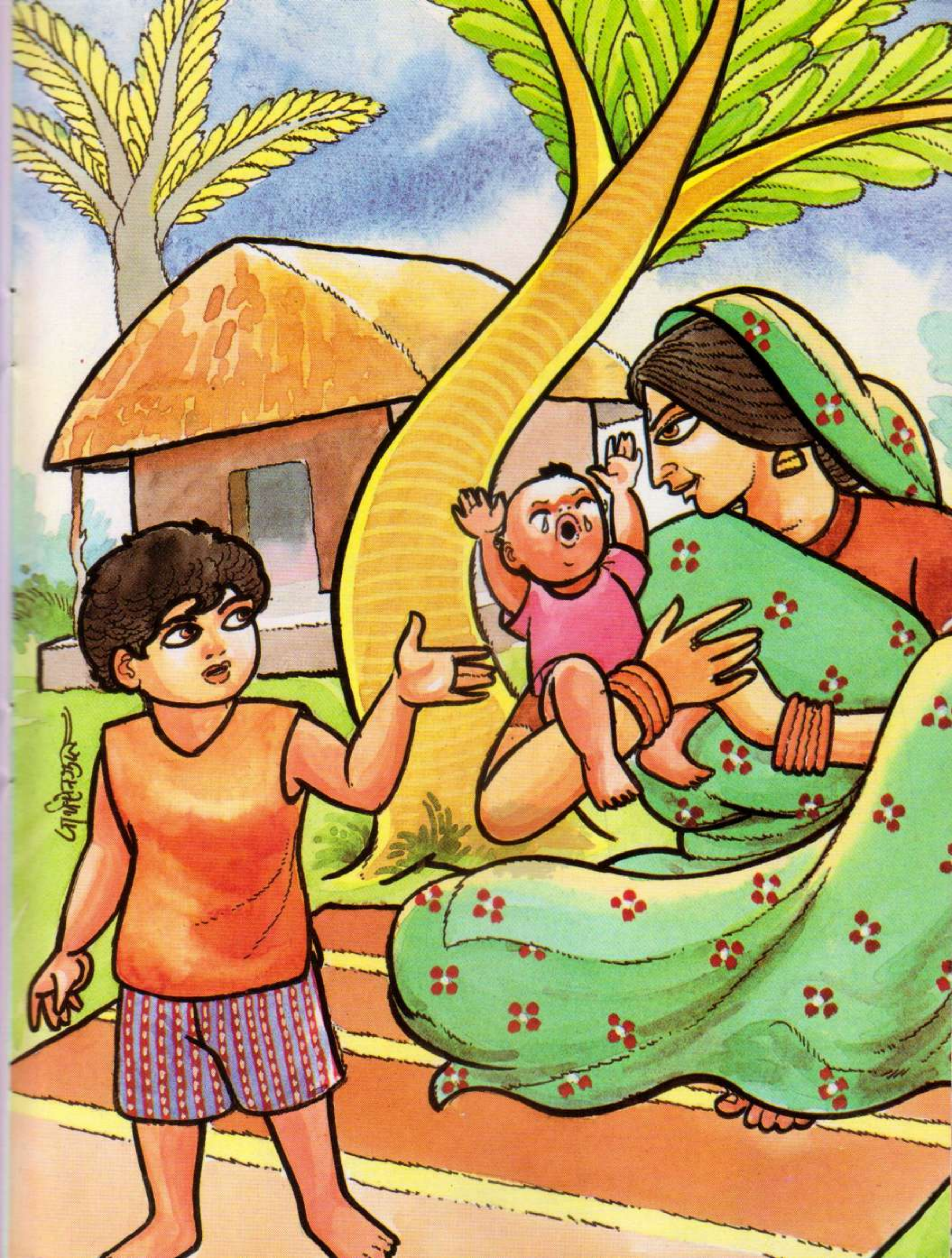

अजय की पाठशाला

उस दिन पहले पहल अजय जब
पढ़ने गए पाठशाला।
उन्हें गुरु जी ने घर भेजा
पहना फूलों की माला ॥
पूछा गया नाम तब बोले
मुझे बड़े भैया कहते।
घर में भी हम नहीं खेलते
सारे दिन पढ़ते रहते ॥
शाम हुई जब घर को लौटे
पट्टी प्रवेशिका लेकर।
स्वागत में उनके उत्सुक सा
खड़ा हुआ था घर का घर ॥
खाने की भी नहीं रही सुध
बैठ गए पुस्तक लेकर।
बोले—पढ़ता हूं न छेड़ना
कोई भी बाधा देकर ॥
मां ने कहा—दूध तो पी लो
बोल उठे—मां रुक जाओ।
वहीं रहो पढ़ने बैठा हूं
मेरे पास नहीं आओ ॥
है शाला का काम बहुत सा
मां उसको कर लेने दो।
ग म भ लिख-लिख कर अम्मां
पट्टी को भर लेने दो ॥
तुम लिखती हो हम आते हैं
तब तुम होती हो नाराज।
मैं भी तो लिखने बैठा हूं
कैसे बोल रही हो आज?
क्या तुम भूल गईं मां पढ़ते
समय दूर रहना चाहिए।
लिखते समय किसी से कोई
बात नहीं कहना चाहिए ॥
यों ही धूम रही दो दिन तक
खूब हुआ लिखना पढ़ना।
याद आ गया किंतु तीसरे
ही दिन पेड़ों का चढ़ना ॥
बोले मां पढ़ लिया बहुत-सा
आज न शाला जाऊंगा।
फूल यहां भी बहुत लगे हैं
माला एक बनाऊंगा ॥
यहां मजे में पेड़ों पर चढ़
बिही तोड़ कर खाता हूं।
मां, शाला में बैठा-बैठा
मैं दिन भर थक जाता हूं ॥
बैठूंगा मैं आज पेड़ पर
पहने फूलों की माला।
मां, मत शाला भेज
इकट्ठा मैंने सब कुछ पढ़ डाला ॥

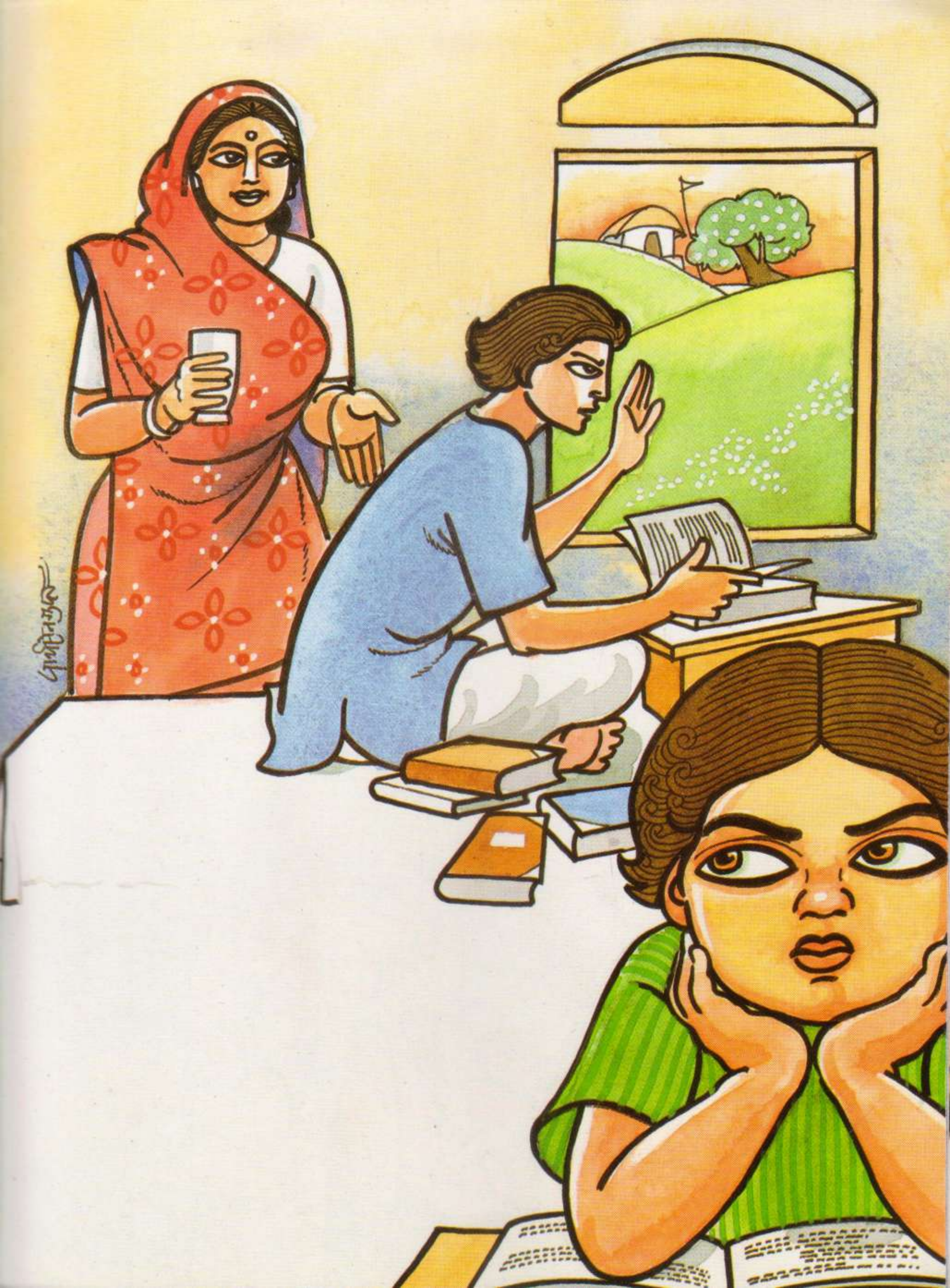

कुट्टी

मोहन से तो आज हो गई
है मेरी कुट्टी अम्मां।
अच्छा है शाला जाने से
मिली मुझे छुट्टी अम्मां ॥
रोज सबेरे आकर मुझको
वह शाला ले जाता था।
दस बजते हैं इसी समय तो
वह अपने घर आता था ॥
मोहन बुरा नहीं है अम्मां
मैं उसको करता हूं प्यार।
फिर भी जाने क्यों हो जाया
करती है उससे तकरार ॥
यह क्या! कुट्टी होने पर भी
वह आ रहा यहां मोहन।
आते उसको देख विजयसिंह
हुए बहुत खुश मन ही मन ॥
बोले—कुट्टी तो है मोहन
फिर तुम कैसे आए हो।
फूल देख उसके बस्ते में
पूछा यह क्या लाए हो ॥
चलो दोस्ती कर लें फिर से
दे दो हमको भी कुछ फूल।
हमें खिला दो खाना अम्मां
अब हम जाएंगे स्कूल ॥

नटखट विजय

कितना नटखट मेरा बेटा।
क्या लिखता है लेटा लेटा ॥
अभी नहीं अक्षर पहचाना।
ग म भ का भेद न जाना ॥
फिर पट्टी पर शीश झुकाए।
क्या लिखता है ध्यान लगाए ॥
मैं लिखता हूं बिटिया रानी।
मुझे पिला दो ठंडा पानी ॥

सभा का खेल

सभा सभा का खेल आज हम
खेलेंगे जीजी आओ।
मैं गांधी जी, छोटे नेहरू
तुम सरोजिनी बन जाओ॥
मेरा तो सब काम लंगोटी
गमछे से चल जाएगा।
छोटे भी खद्दर का कुरता
पेटी से ले आएगा॥
लेकिन जीजी तुम्हें चाहिए
एक बहुत बढ़िया साड़ी।
वह तुम मां से ही ले लेना
आज सभा होगी भारी॥

मोहन लल्ली पुलिस बनेंगे
हम भाषण करने वाले।
वे लाठियां चलाने वाले
हम घायल मरने वाले॥
छोटे बोला देखो भैया
मैं तो मार न खाऊंगा।
मुझको मारा अगर किसी ने
मैं भी मार लगाऊंगा॥
कहा बड़े ने छोटे जब तुम
नेहरू जी बन जाओगे।
गांधी जी की बात मान कर
क्या तुम मार न खाओगे॥

खेल-खेल में छोटे भैया
होगी झूठ-मूठ की मार।
चोट न आएगी नेहरू जी
अब तुम हो जाओ तैयार॥
हुई सभा प्रारंभ कहा
गांधी ने चरखा चलवाओ।
नेहरू जी भी बोले भाई
खद्दर पहनो पहनाओ॥
उठ कर फिर देवी सरोजिनी
धीरे से बोलीं बहनो।
हिंदू मुस्लिम मेल बढ़ाओ
सभी शुद्ध खद्दर पहनो॥
छोड़ो सभी विदेशी चीजें
लो देशी सूई तागा।
इतने में लौटे काका जी
नेहरू सीट छोड़ भागा॥
काका आए काका आए
चलो सिनेमा जाएंगे।
घोरी दीक्षित को देखेंगे
केक मिठाई खाएंगे॥
जीजी चलो सभा फिर होगी
अभी सिनेमा है जाना।
आओ खेल बहुत अच्छा है
फिर सरोजिनी बन जाना॥
चलो चलें अब जरा देर को
घोरी दीक्षित बन जाएं।
उछलें कूदें धूम मचाएं
मोटर गाड़ी दौड़ाएं॥

झांसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

कानपूर के नाना की मुंहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,
वीर शिवाजी की गाथाएं
उसको याद जबानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,
महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झांसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झांसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियां छाईं झांसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झांसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियां कब भाईं,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,
निःसंतान मरे राजा जी
रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

बुझा दीप झांसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झांसी आया,
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झांसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फिरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,
रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महारानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपूर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जब कि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,
बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो यही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

रानी रोईं रनिवासों में बेगम गम से थीं बेजार
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
'नागपूर के जेवर ले लो' 'लखनऊ के लो नौलख हार',
यों परदे की इज्जत परदेशी
के हाथ बिकानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुन्धूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,
हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो
सोई ज्योति जगानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी ॥

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झांसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी ॥

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम
नाना धुन्धूपन्त, तांतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुंवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,
लेकिन आज जुर्म कहलाती
उनकी जो कुरबानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी ॥

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झांसी के मैदानों में,
जहां खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुंचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्वअसमानों में,

जख्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥
रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया
ने छोड़ी राजधानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥
विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुंह की खाई थी,
काना और मन्दरा सखियां रानी के संग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,
पर, पीछे ह्यू रोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥
तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,

घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारत वासी
यह तेरा बलिदान जगाएगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फांसी
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झांसी,
तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झांसी वाली रानी थी॥

एस.एस. एन्टरप्राईजेज, नई दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा
पुष्पक प्रेस प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

रु. 30.00 ISBN 978-81-237-4858-X

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया